

॥ ओ३म् ॥

# भक्ति मार्गः

लेखक

स्वामी

रघुनाथ शर्मा

BY

**SWAMI**

**Raghu Nath Sharma.**

इम्पीरियल नेटिव प्रेस देहली में  
वाचू रघुवरदयाल के प्रबन्ध से छपी ॥

मिती चैत्र कृष्णा ६ शनिवार  
सम्बत् १९७१

## ॥ प्रार्थना ॥

सच्चिदानन्देश्वराय नमः । सच्चिदानन्द आनन्द कन्द  
असुरारी बनविहारी भगवानकी प्राप्तिके लिए भक्ति एक  
मुख्य साधन माना है और सब साधन गौण माने गए हैं  
यदि वास्तविक देखा जाय तो विदित होता है कि आत्मा  
परमात्मा से एक न होजाय अर्थात् उसकी इच्छा के आ-  
धीन न होजायें तब तक जीवन में कोई भी आनन्द  
नहीं और अपनी वासना स्थूल हो वा सूक्ष्म किंचित्  
भी नहीं रहनी चाहिये केवल परमात्मा की इच्छा को  
परम इच्छा समझकर उसको पालन करना और अपने  
मिथ्या अहंका उस में विस्मरण करना ही अन्तिम पद  
है भगवत् को त्याग किसी वस्तुका आश्रय न लेना कि-  
न्तु तन, मन, प्राण और आत्मा को भगवत् से उत्पन्न  
हुए ज्ञान और उसी के आधार समझ उसी में लीन कर  
देना ही जीवन का लक्ष्य है कोई कर्म करे वह भगवत् अ-  
र्पण हो ऐसे भक्ति योगद्वारा व्यवहार और परमार्थ में  
कुछ अन्तर नहीं रहता वह जीवन मुक्त हो जाता है  
सो उस भक्तिका संक्षेपतः विवरण आप लोगों के ह-  
स्तगत किया जाता है सच्चे प्रेम से पढ़ो ॥

ओ३म् तत्सत्

॥ आ

भक्तिका अनिर्व-  
रुंगे के स्वाद की  
जाता यथा धुतिः

समाधि निधूत म  
खं भवेत् । न शक्य  
चित्त के मल छूट

जानेपर जो सुख होत  
क्योंकि उसको स्वर  
करता है "अमृत स्वर

का अमृत स्वरूप अ  
पि पात्रे" यथा-वृज  
में प्रकाशमान होती

जाति विद्या रूप कु  
प्राप्त होने में जाति  
भेद नहीं है जैसा कि

व्याधस्या चरणं ध्रुव  
कुवनाया कि नामरूप

॥ ओ३म् ॥

## ❀ भक्तिमार्ग ❀

॥ अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरूपम् ॥

भक्तिका अनिर्वचनीय प्रेम स्वरूप है मूका स्वादनवत्  
गूंगे के स्वाद की तरह उसका आनन्द वर्णन नहीं किया  
जाता यथा श्रुतिः—

समाधि निश्चूत मलस्य चेतसो निवेश यन्नात्मनि यत्सु-  
खं भवेत् । न शक्यते वर्णयन्तु गिरा ॥ समाधि द्वारा  
चित्त के मल छूट जाने पर परमेश्वर में चित्त के लग  
जानेपर जो मुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जाता  
क्योंकि उसको स्वयं आत्मा शुद्धास्तः करण से ग्रहण  
करता है “अमृत स्वरूपा शान्तस्वरूपाच” और भक्ति  
का अमृत स्वरूप और शान्तिस्वरूप है “प्रकाश्यते का-  
पि पात्रे” यथा-वृज गोपिकानाम्, यह भक्ति किसी पात्र  
में प्रकाशमान होती है जैसे वृज गोपियों में “नास्ति तेषु  
जाति विद्या रूप कुल धन क्रिया भेदः” उस भक्ति के  
प्राप्त होने में जाति विद्या, रूप, कुल, धन और क्रिया का  
भेद नहीं है जैसा किः—

व्याधस्या चरणं ध्रुवस्य च वयोः विद्या [गजेन्द्रस्य कौं] ।  
कुवजाया किं नामरूपमधिकं किं तत् सुदाम्नो [धनं मे] ॥

बंधः को विदुरस्य यादवपते रुद्रस्य किं पौरुषम् ।  
भक्त्या तुष्यति केवलं नच गुणैर्भक्तिः प्रियोमाभवः ? ॥

स्त्री और पुरुष का भेद नहीं, जैसा कि भगवद्भजन है  
परन्तु जो भगवान् की शरण लेते हैं वह चाहे पापी से  
भी पापी क्यों नहीं और उनकी कैसी भी नीच योनि  
हो वह भी परमपद मोक्षको प्राप्त होते हैं यथा:—

अपि चेदसि दुराचारो भजते मामनन्य भाक् ; ।

साधुरेवसः मन्तव्य सम्यग् व्यवसितोहिसः ॥

अत्यन्त दुराचारी भी एक निश्चय से मेरा भजन करे  
गा तो उसे भी निश्चित साधु ही समझना चाहिये क्यों  
कि उसका निश्चय अच्छा है:—

मां हि पार्थ विपाश्रित्य येपिशुः पाप योनयः ।

स्त्रियो वैश्या स्तथा शूद्राः तेपि यान्ति परां गतिम् ॥

जो पाप योनियां हैं वह भी मेरा आश्रय करें, वह  
भी परम पद मोक्ष को प्राप्त हों उसी प्रकार स्त्री, वैश्य,  
शूद्र, कोई भी मुझको आश्रय करके संसृति चक्र में नहीं  
पड़ता मृत्युत परम पदको प्राप्त होता है और भी कहा है:

अद्रेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च ।

निर्ममो निरहंकारः सम दुःखः सुखः क्षमी ॥

सन्तुष्टः सततं योगी यत्नात्मा हृद् निश्चयः ।

बन्धुवित मनो बु  
सप भूतों में द्वेष रहित  
अहंकार से रहित सुख  
दान और सदैव सन्तो  
संयमी है और जिसका  
पना मन बुद्धि मुझको  
है वह मुझे प्रिय है:—

ममना भव भद्रक्तो  
पामे वैष्यसि युत्कैव

मेरे मन वाला हो मे  
कर मुझको ही प्राप्त हो

को मेरे परायण कर, य  
ब्रह्मरथा धाय कर्मार

क्षिप्यतेन सपापेन  
जो पुरुष कर्म फल व

अर्पण करता है वह पाप  
जैसे पानी से कमल व

नारद सूत्र में भी कहा  
[ तद्दिस्मरणो परं व्याकु

अपने सम्पूर्ण कर्मों को

बन्धुर्पित मनो बुद्धिर्योमे भक्तः समेप्रियः ॥

सब भूतों में द्वेष रहित सबका मित्र और दयालुरहे  
अहंकार से रहित सुख दुःख में समान चित्तवाला क्षमा-  
वान् और सदैव सन्तोषी है स्थिर चित्त और मनका  
संयमी है और जिसका हृद निश्चय है और जिसने अ-  
पना मन बुद्धि मुझको अर्पण करदी है वह मेरा भक्त  
है वह मुझे प्रिय है:—

मग्मना भव भङ्गक्तो मध्याजी मां नमस्कुरुः ।

मामे वैष्यसि युत्क्वैव मात्मानं मत्परायणः ॥

मेरे मन वाला हो मेरा भक्त बन मुझको नमस्कार  
कर मुझको ही प्राप्त होजावेगा इस प्रकार अपने आप  
को मेरे परायण कर, यही भक्ति है और भी कहा है

ब्रह्मभया धाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोतियः ।

क्षिप्यतेन सपापेन पद्म पत्र भिवाम्भसा ॥

जो पुरुष कर्म फल की कामना छोड़ कर्मों को ब्रह्मके  
अर्पण करता है वह पाप से इस प्रकार लिप्त नहीं होता ।  
जैसे पानी से कमल का पत्र छिपायमान नहीं होता  
नारद सूत्र में भी कहा है (तदर्पिता अखिला चारता)  
[ तद्विस्मरणो परं व्याकुलता ] उस परमात्मा के अर्पण  
अपने सम्पूर्ण कर्मों को करदेवे और उसके विस्मरण में

किं पौरुषम्  
योमाभवः ?  
के भगवद्भक्त  
ह चाहे पापी  
भी नीच पो  
हैं यथा:—  
न्य भाक् !  
तोहिसः ॥  
मेरा भजन  
ना चाहिये क  
योनयः ।  
न्ते परां गति  
आश्रय करें,  
प्रकार स्त्री,  
सृति चक्र में  
और भी क  
एवच ।  
सुखः क्षमी ॥  
हृद निश्चयः ।

IN RAJ...  
AMMU: Three C...  
blast near the L...  
(C) in Rajouri...  
and Kashmir...  
from a...  
into a...  
has...  
10,000 s...  
states for p...  
ate courses au...  
The number of...  
ved so far is abo...  
ambitious scheme...  
choose from amon...  
on the basis of...  
ans...  
those par...  
5 lakh...  
to...  
of the country...  
"The stud...  
where in I...  
funded v...  
to have...  
north...  
UC...  
of...  
ing a...  
will get...  
course's...  
me will be...  
who have...  
in undergradu...  
2014-15...  
tally, Assam goe...  
st year and th...  
ng party at the...  
n to build upo...  
ormance in the...  
or there, when...  
tally ever of...  
This apart...  
ed to have a...  
increasin...  
ratio in

परं व्याकुलता होवे तो जब जानो कि भक्ति का समुद्र मेरे भीतर उमड़ रहा है "सतु कर्म ज्ञानेभ्यो प्यधिकतरः"

वह भक्ति कर्म ज्ञान योग से भी अधिकतर है 'पुनन्ति कुलानि पृथिवीच' भक्त अपने कुल और सम्पूर्ण पृथिवी को पवित्र करता है सर्व सांसारिक वासनाओं का त्याग विशेष कर काम का त्याग करना और भगवत् चरणों में अतिशय गाढ़ प्रेम, अपनी सर्व वासनाओं के ऊपर भगवत् इच्छा का अधिकार स्थापित करना, अर्थात् जितनी वासना फुरें सर्व भगवत् इच्छा से प्रेरित हों वा भगवत् इच्छा को पूर्ण करने वाली हों और उसके विरुद्ध कोई वासना न फुरने पावे हृदय में भगवत् प्रेमकी अजस्रधारा ऐसी निरन्तर बहती रहे जैसे गंगाका प्रवाह, कभी एक क्षण भी हृदय भगवत् प्रेम से शून्य न रहे और जैसे मीन के लिए जल ही जीवन होता है, वैसे ही भक्ति मार्ग पर चलने वालेके लिए भगवत् प्रेम ही जीवन होता है श्रोत्र से भगवत् के गुण श्रवण करना, जिन्हासे उन के गुण कीर्तन करना, हस्तों से पूजा और सेवा करनी पगों से उसके कार्य पूर्ण करने अर्थात् चलना, मुखसे नाम उच्चारण करना तथा भगवत् कथा का पाठ करना नास्तिका से भगवत् चरण से स्पर्श हुए पुष्पोंकी सुगन्धि लेनी इत्यादि सर्वाङ्गों को भगवत् के अर्पण करना ही

मनका उद्देश्य है। मन से  
प्यान और चित्त से स्व  
अपना, मान करना,  
विद्वान्, सर्व भगवत्  
गार है सर्वत्र ही भगव  
तिका मुख्य साधन मान  
भक्तिसे अपने भक्तों की

मम भक्ताः हिये प

मद्वक्तस्तु ये भक्ता

है पार्थ जो मेरे भक्त  
हस्तों में के भक्त हैं वे

ले भक्तों केलिये अपने  
गलते हैं जिस प्रकार अप

मतिवा पुरी करी इस से  
विश्वास कर ये शब्द

भजन-आज जो मैं हरि  
गंगा जननी को शान्त

सारथिय खगड़ों कपिध  
मममुख वंदे धाऊं सरित

गय भोय हरिकी लत्रो

जीवनका उद्देश्य है। मन से स्वरूपका चिन्तन करना, बुद्धि से ध्यान और चित्त से स्मरण और अहंकार से भगवत् पर अपना, मान करना, इस प्रकार आत्मा से आत्म निवेदन, सर्व भगवत् समर्पण करना ही जीवनका आधार है सर्वत्र ही भगवत् केलिये व्याकुल होना भक्तिका मुख्य साधन माना गया है पद्म पुराण में अपनी भक्तिसे अपने भक्तों की भक्ति उचम बतलाते हैं:—

मम भक्ताः हिये पार्थः नमे भक्तस्तुते मताः ।

मद्भक्तस्तु ये भक्ता स्तेमे भक्त तमाः मताः ॥

हे पार्थ जो मेरे भक्त हैं वे भक्त नहीं किन्तु जो मेरे भक्तों में के भक्त हैं वे मेरे मत में श्रेष्ठ हैं। भगवान् अपने भक्तों केलिये अपने प्रण को छोड़ भक्तों का प्रण पाखते हैं जिस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा छोड़ भीष्मजी की प्रतिज्ञा पूरी करी इस से परम भक्त भीष्म पितामह पूरा विश्वास कर ये शब्द कहते हैं:—

भजन-आज जो मैं हरि है न शस्त्र गहाऊं॥टेक॥ तो लाजुं गंगा जननी को शान्तनु सुत न कहाऊं। सिन्दन खण्ड सारथिय खगडों कपिध्वज सहित गिराऊं। पाखडव दल सन्मुख वैं धाऊं सरिता रुधिर वहाऊं। इतनो न करूं शपथ मोय हरिकी क्षत्री गति नहीं पाऊं। सूरदास रण

भूमि विजय विन जीवत न पीठ दिखाऊँ ॥

इसी प्रकार सच्चिदानन्द श्री पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीता सहित नदी तट पर पहुँच कर केवट को नवका छाने की आज्ञा दी तो केवट भगवान् का परम भक्त उनकी आज्ञानुसार नवका लाकर उपस्थित हुआ और प्रेम पूर्वक बोला महाराज अपने चरण प्रथम धुलवाके नवका पर आरूढ़ हुआ क्योंकि आप के चरणों की रजसे पाषाण की शिला बनी हुई स्वर्ग को चली गई ऐसे ही मेरी नवका चली गई तो मेरा निर्वाह किस पर होगा और मैं अपने कुटुम्ब सहित आपके चरणामृत को पान करूँगा तो हमारा स्वर्ग में वास होगा तो भगवान् ने, अपने भक्त की विनय सुनकर वैसा ही किया जब पार उतर कर उसको उतराई देने लगे तो उसने निम्न लिखित प्रेम भरे शब्द कहे:—

श्लोकः—अहंतु नद्यः पर पार कर्तात्वं वैभवान्धैः परपार कर्ता । न नाविकां नाविक एव कर्म मौल्यं लभे-  
त्सिंहि कथं तदेषि ॥

त्वचो न घृहामि यथाह मेद्यो प्राणं तथा वैभव-  
ता न तत्र । इत्थं प्रकारेण मया त्वयाच धर्म  
व्यवस्था परिपालनीया ॥ ?

इस का भावार्थ नि-  
जाल पात न्यारी क-  
एक नीके के निहारिये  
रय सरिता उतार हम  
लेत धोबी ना धुलाई  
गारिये । पेशा अधमार्हि  
घाट आये नाथ मोहू व

इसी प्रकार जब भ-  
पात का कुछ ख्याल  
ता माना जैसा कि अध-  
पुंसत्वे स्त्रीत्वे विशेष  
न कारण मद्भजने  
पद्भदान तपो भिर्वा  
नेव द्रष्टु महं शक्तो  
अर्थ—रामजी कहते  
पे मेरे भजन में कोई का  
और जो मेरी भक्ति से  
दाध्ययनादि कर्मों को  
अथ भक्ति विषय में प-  
पवित्र चौपाई कुछ लि



इस का भावार्थ निम्न लिखित कवित्त से समझना:—  
जात पात न्यारी करी हमरी तुम्हारी नाथ केवट के कर्म  
एक नीके के निहारिये। तुम तो उतारो भवसागर परमा-  
रथ सरिता उतार हम कुटुंब गुज़ारिये ॥ नाईते न नाई  
लेत धोबी ना धुलाई लेत देके उतराई मोहू जात ना वि-  
गारिये। पेशा अधमाई जान आप को उतार दीनो धारे  
घाट आये नाथ मोहू को उतारिये ॥१॥

इसी प्रकार जब भगवान् शिवरी के यहां गए तो जात  
पात का कुछ खयाल न कर केवल भक्तिका ही गाढ़ ना-  
ता माना जैसा कि अध्यात्म रामायण में लिखा है:—

पुंसत्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जाती नामा श्रमोद्भवः ।

न कारणं मद्भजने भक्तिरेव हि कारणम् ॥

यद्भदान तपो भिर्वा वेदाध्ययन कर्मभिः ।

नैव द्रष्टु महं शक्तो मद्भक्तिः विमुखैः सदा ॥

अर्थ—रामजी कहते हैं कि पुरुष, स्त्री, जाति और आश्रम  
ये मेरे भजन में कोई कारण नहीं केवल भक्ति कारण है  
और जो मेरी भक्ति से विमुख हैं वे यज्ञदानतप और वे-  
दाध्ययनादि कर्मों को करके मुझे कभी नहीं देखसक्ते,  
अब भक्ति विषय में परम भक्त गुसाई तुलसीदास जीकी  
पवित्र चौपाई कुछ लिख कर पुस्तक समाप्त करते हैं ॥

चौपाई—नाना कर्म धर्म व्रत दाना ।  
संमयनियम यज्ञ जपनाना ॥  
भूत दया द्विज गुरु सेव काई ।  
विद्या विनय विवेक बढ़ाई ॥  
जहां लग साधन वेद घखानी ।  
बस कर फल हरि भक्ति भवानी ॥  
परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा ।  
पर निन्दा सम अघन गरिंसा ॥  
मेरे पन प्रभु अस विश्वासा ।  
रामते अधिक रामके दासा ॥  
असविचार जो करे सत्संगा ।  
राम भक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥  
भक्ति हीन गुण सुख सब ऐसे ।  
लवण बिना बहु व्यञ्ज जैसे ॥  
भक्ति हीन विरंचि किन होई ।  
सब जीवन समप्रिय मोय सोई ॥  
भक्तिवन्त अति नीचहु प्राणी ।  
मोहे पाण प्रिय सुन मम वाणी ॥

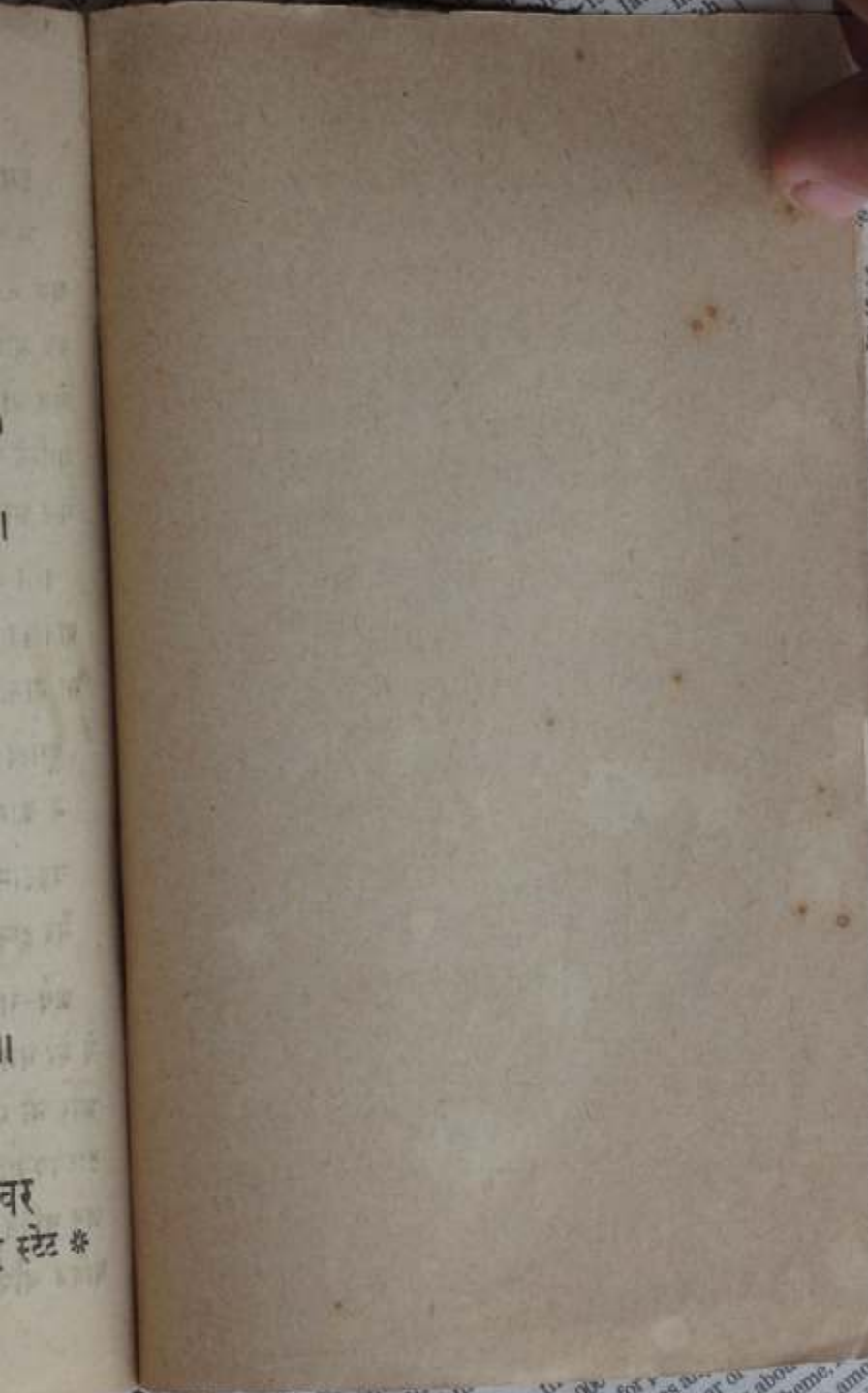
प्रकाशक—

भक्त श्रीकृष्ण

घासीराम गिरदावर

\* जौंद स्टेट \*

...class...  
...day...  
...Kashm...  
...stand...  
...at...  
...NAGAR: ...  
...after a w...  
...ing with...  
...trists aw...  
...will be th...  
...ic on April...  
...is spread...  
...land...  
...has...  
...ch...



...n 22...  
...d from...  
...ded this...  
...is a major...  
...ourists com...  
...ey in April. Last...  
...people visited the...  
...the first week, the...  
...crossed the 2-lakh...  
...n 30 days.

## ...nts to get... ...er educatio...

...of the country...  
...The stud...  
...where in...  
...funded...  
...to hav...  
...nor...  
...UC

...ng a profes...  
...l get ₹7,000 a...  
...the duration of...  
...one pursuing a...  
...onal course will get...  
...sch for the course's...  
...n. The scheme will be...  
...able to students who have...  
...an admission in undergradu...  
...courses in 2014-15...  
...Significantly, Assam gov...  
...the polls next year and th...  
...the ruling party at the...  
...is keen to build upon...  
...performance in the...  
...polls there, when...  
...est tally ever of...  
...This apart...  
...ed to have a...  
...increas...  
...ratio in

वर  
स्टेट \*

MMU: Three...  
...blast near th...  
...C) in Rajou...  
...u and Kashm...  
...d from a...  
...into a...  
...ns

...10.00...  
...states for...  
...ate courses...  
...The number of...  
...ved so far is abou...  
...tributive scheme...  
...choose from among...  
...on the basis of...  
...ans...  
...hose par...  
...5 lakh...  
...to

closed for  
ative day  
ered by  
to Kashmir  
randed at

SRINAGAR: ...  
after a w  
ing with  
ists will be  
on April  
spread

TWO-YEAR  
IIT-JEE  
For Stud



...n 22  
... from  
...ed this  
... is a major  
...ourists com-  
...y in April. Last  
...ople was the  
...the first week, the  
...crossed the 2-lakh  
...30 days.

## nts to get r educatio

of the country  
"The stud  
where in  
funded r  
to have  
north  
UC  
g a profes-  
get ₹7,000 a  
re duration of  
one pursuing a  
mal course will get  
sch for the course's  
The scheme will be  
to students who have  
able to students in undergradu-  
admission in undergradu-  
courses in 2014-15.  
Significantly, Assam gov  
the polls next year and th  
the ruling party at the  
is keen to build upon  
performance in the  
polls there, when  
est tally ever of  
This apart  
ed to have a  
increas  
ratio in

## IN RAGE

MMU: Three civi  
and another in  
blast near the L  
(C) in Rajouri di  
and Kashmir  
d from a  
into a  
sh  
the ac-  
10,000 stu-  
states for pur-  
ate courses any-  
The number of at-  
ved so far is about  
ambitious scheme, is  
choose from among  
on the basis of  
ans.  
those par-  
lakh  
to